: प्रथम अध्याय :

: प्रथम अध्याय :

कमलेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

जीवन के कठोर संघर्षों से तपकर कुंदन के समान जिनका व्यक्तित्व उभर आया है ऐसे स्वातंत्र्योत्तर काल के प्रमुखतम साहित्यकार कमलेश्वरजी को हर एक हिंदी प्रेमी जानता है। एक श्रेष्ठ कहानीकार होने के साथ ही वे श्रेष्ठ उपन्यासकार, नाटककार, आलोचक, यात्रा, वृत्तकार, फिल्म कथाकार, संपादक आदि सभी के ~~नाटककार,~~ आलोचक, ~~यात्रा, वृत्तकार, फिल्म कथाकार, संपादक आदि सभी के~~ नाते हिंदी साहित्य में अपना उच्च स्थान प्राप्त कर चुके है। `सारिका` पत्रिका के संपादक के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने हिंदी कहानी को अलग ही पट्री पर बिठा दिया। नयी कहानी आंदोलन के सफल समर्थक के रूप में भी वे जाने जाते हैं। साहित्य की इन विधाओं में साहित्य सृजन का कार्य करने के साथ- साथ उन्होंने अन्य भी कई तरह का काम किया है।.

कमलेश्वर : जन्म, बचपन, शिक्षा एवं परिवार

कमलेश्वरजी का जन्म 6 जनवरी 1932 में कटरा, मैनपूरी (उत्तर प्रदेश) में हुआ। इनका पूरा नाम कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना है। उनके बड़े भाई सिद्धार्थ थे। जिनके सहयोग से उन्होंने शिक्षा हासिल की। अत्यंत कठिन संघर्ष से उन्होंने पढ़ाई पूरी की। कभी-कभी फिस पूरी करने के लिए भी उनके पास पैसे नहीं होते। इसी वजह से उन्हें बार-बार स्कूल में जलील किया जाता रहा फिर भी उन्होंने एम. ए. तक की शिक्षा हासिल की। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गवर्नमेंट हाईस्कूल मैनपुरी में सन् 1946 में संपन्न हुई। सन् 1950 में के. पी. इण्टर कॉलिज, इलाहाबाद से इण्टर मिडिएट की परिक्षा पास की। सन् 1954 में इलाहबाद विश्वविद्यालय से एम. ए. की परिक्षा पास की। उन्होंने भौतिकी, रसायनशास्त्र, गणित, अर्थशास्त्र, भूगाले आदि विषय भी सिखे। उनके जीवन परिचय में, उनकी माँ का जिक्र बार-बार आया है। जिन्होंने बचपन में किसी तरह गुजारा कर अपने बच्चों को

पाला। दु:ख, विवशता संघर्ष उनके माँ के जीवन में इतना अधिक था कि उनके आँसु भी सुख गये थे। कमलेश्वर की पत्नी का नाम गायत्री था। वह हमेशा बिमार रहती थी। वह भी अपने पति के साथ परिस्थिति से संघर्ष करती थी।

नौकरियाँ

आरंभ से ही पारिवारिक जिम्मेदारियाँ आ जाने के कारण कमलेश्वरजी ने उन्हें निभाने के लिए कई जगहों पर नौकरियाँ की। सबसे पहले उन्होंने प्रकाश प्रेस, मैनपूरी, में प्रुफरिडिंग का काम किया। उस वक्त वे स्थानीय पत्र में कभी-कभी लेखन कार्य भी करते रहे। उन्होंने कानपुर इलाहाबाद से निकलनेवाली पत्रिका `जनक्रांति` में अवैतनिक कार्य किया और विधिवत लेखन कार्य किया। इसी बीच उन्होनें वैज्ञानिक मार्क्सवाद से परिचय की भूमिका की तैयारी की। तत्पश्चात इलाहबाद से निकलेवाली `बहार` मासिक पत्रिका के संपादन का कार्य पचास रूपये माहवार पर किया। यहाँ तक की इलाहाबाद में उन्होंने शहनाज आर्ट साईन बोर्ड पेन्टर्स में अनियमित तनख्वाह पर साईन बोर्ड पेन्टींग का कार्य किया। राजा आर्ट इलाहाबाद में उन्होंने अनियमित तनख्वाह पर कागज के डिब्बों आदि की डिजाईने तैयार करने का काम किया। इसके पश्चात् उन्होंने एक नया नाम धारण किया और इलाहाबाद में चाय के एक गोदाम में रातपाली की चौकीदारी की। इलाहाबाद में ही `कहानी` मासिक पत्रिका के कार्यालय में सौ रूपये माहवार की नौकरी उन्होंने की। फिर इलाहाबाद के ही `राजकमल प्रकाशन` में साहित्य संपादक के रूप में उन्होंने डेढ़ सौ रूपये माहवार पर नौकरी की इसी वक्त कॉलेज अध्ययन के अलावा वे इलाहाबाद के `सेन्ट जोसेफस् सेमिनरी` में भारतीय तथा विदेशी कॅथेलिक ब्रदर्स को हिंदी पढ़ाने का काम किया करते थे। इसके लिए उन्हें एक सौ पच्चीस रूपये महिना वेतन मिलता था।

इसी बीच उन्होंने `श्रमजीवी प्रकाशन` की शुरूवात की परन्तु अन्य प्रकाशकों को पुस्तके सप्लाई करके पैसा न पा सकने के कारण उनपर बत्तीस हजार का कर्जा चढ़ गया और उन्हें यह प्रकाशन बंद करवा देना पड़ा। इसके बाद उन्होंने इलाहाबाद ऑल इण्डिया रेडिओ में दो सौ पचहत्तर रूपये माहवार पर स्क्रिप्ट राईटर का काम किया। उसके पश्चात् वे दिल्ली चले गये और वहाँ उन्होंने दिल्ली दूरदर्शनपर दो सौ पचहत्तर

रूपये माहवार पर स्क्रिप्ट राईटर का काम किया। इसके पश्चात् उन्होंने दिल्ली में नई कहानियाँ, `इंगित` साप्ताहिक का संपादन किया।सन् 1967 के मार्च महिने में उन्होंने `सरिका` नामक पत्रिका की शुरूवात की। उसके संपादक के रूप में वे कार्य करते रहे।

उपनाम

इतनी सारी नौकरियों के बीच भी साहित्य सृजन का महत्त्वपूर्ण काम करनेके लिए कमलेश्वरजी को बार- बार नये उपनाम धारण करने पड़ते थे। उन्होंने लगभग पाँच उपनामों से हिंदी में साहित्य सृजन किया जैसे - विप्र गोस्वामी, संजय, हरिश्चंद्र, सौमित्र सिन्हा, पर्यवेक्षक। फिर भी हिंदी का समस्त संसार उन्हें `कमलेश्वर` नाम से ही जानता है।

अन्य कार्य

साहित्य सृजन के अलावा कमलेश्वरजी ने अन्य भी कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये जिनकी वजह से उन्हें जाना जाता है। उन्होंने आकाशवाणी के लिए लगभग 700 स्क्रिप्ट का लेखन किया। इसी प्रकार दूरदर्शन के लिए भी उन्होंने लगभग ढ़ाई सौ स्क्रिप्ट का लेखन किया। उन्होंने दिल्ली दूरदर्शन पर समाचार प्रस्तुत तो किये ही परन्तु अन्य भी कई कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण किया। दूरदर्शनपर उन्होंने एक साहित्यिक कार्यक्रम की शुरूवात की जिसका नाम `पत्रिका` था। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर रनिंग कामेंट्री की शुरूवात कमलेश्वरजी ने ही की थी। उन्होंने `पंद्रह अगस्त` नामक एक फिल्म का निर्माण भारतीय दूरदर्शन के लिए किया। उन्होंने भारतीय दूरदर्शन के लिए एक और फिल्म का निर्माण किया जिसमें भिवण्डि (महाराष्ट्र) में हुए हिंदू मुस्लिम दंगो का चित्रण था। इसके साथ ही बाँग्ला देश मुक्ति संग्राम में लगभग 20 दिन वे मुक्ति वाहिनी के साथ थे। यहाँ तक की राजस्थान में हुए चुनावों में प्रगतिशील उम्मीदवारों के लिए स्वतंत्र पार्टी के विरोध में प्रचार कार्य किया। वे बाँग्ला देश मुक्ति संग्राम के लिए विदेशों में जाकर प्रचार कार्य करते रहे।

कमलेश्वर का व्यक्तित्व

कमलेश्वर का व्यक्तित्व इतना बहुमुखी, बहुआयामी है कि, उसका चंद लफ्जों में वर्णन करना बहुत ही कठिन है। उनके व्यक्तित्व की पहचान कराते हुए उनके एक अज़ीज़ दोस्त दुष्यंत कुमार ने लिखा है - ``अब तक आपकी मुलाकात इस व्यक्ति से न हुई हो तो जरूर अब मिलिए आप पायेंगे कि वह बेहद खुशदिल, खुशमिजाज और मिलनसार आदमी है। लतीफों और चुटकुलों की फुलझाडियों से वह महफिलें गुलजार रखता है। और बात को मोड़कर बात पैदा करने में उसका जवाब नहीं।''[1]

कमलेश्वर को कोई एक अफसाननिगार मानता है तो कोई नई कहानी का निर्माता उनके अफसाने लाजवाब है। उनके व्यक्तित्व के कई पहलु है। उनके गुणों को अपने ढंग से अरविंद कुमारजी ने इस प्रकार लिखा है - ``कमलेश्वर के चालचलन, तौर-तरिकों, बरताव-व्यवहार में हर बात है जो वर्तमान समाज- व्यवस्था में अपने को बचाने के लिए हर बशर के लिए कतई जरूरी है। उसमें इमानदारी निष्ठा, दोस्तों के प्रति लॉयलटी, मेहनत, दिमाग, सिद्धान्तवादिता सभी कुछ है।''[2]

इन सारे गुणों का वर्णन पढ़कर हमें लगता है कि इतने सारे गुणों से युक्त ये इन्सान दिखने में है कैसा ? हम पाते है कि घने लंबे बाल, आँखों पर सफेद चष्मा, श्क्लपर हमेशा हँसी की झलक, नाटा कद, आँखे मँझले आकार की, बड़ा और खूबसुरत माथा और भँवे, चूस्त-दूरूस्त मोहक चेहरे से युक्त कमलेश्वर एक अच्छे लेखक, संपादक, वक्ता, नेता और आदमी है। उनका बाते करने का तरिका साम्नेवाले को प्रभावित करता है। वे अत्यंत मेहनती इन्सान है। वे घण्टों लिखते और पढ़ते रहते हैं। उनके स्टैमिना के बारे में राजेंद्र यादव जो कहते थे, उसे दूष्यंत कुमार ने यों उद्धृत किया है - ``इसलिए राजेन्द्र यादव कहा करता है - यार इस आदमी में कितना स्टैमिना है दिन-भर घूम सकता है , बैल की तरह काम कर सकता है, रात-भर जागकर दोस्तों के साथ ठहाके लगा सकता है, फिर भी चेहरे पर थकान या शिकन नहीं ! जाने किस चक्की का पिसा खाता है।''[3] राजन्द्र यादव हमेशा से ही उनके बारे में कहा करते थे कि कमलेश्वर अपना सच नहीं बोलता, मगर अपने युग और अपनी पीढ़ी का सच जरूर बोल सकता है ! कमलेश्वर अत्यंत अतिथ्यशील भी है। उनकी कथनी और करनी में एक्य है। जसवंत सिंह बिरदी ने उनके बारे में लिखा है - ``साहिब ! कमलेश्वर जितना धरती से बाहर है उससे तीन गुणे से

भी अधिक वह धरती के भितर है और इस तरह के लोग भुमि पर कभी-भी फिसलते नहीं। उनके पाँव भी नहीं उखडते। बल्कि और बहुत-से लोग उनके तप तेज की ओर देख कर विश्वास का प्रकाश हासिल करते है। बस् ---- कमलेश्वर इसी तरह का ही इन्सान है।``[4] इसी वजह से उनकी मुस्कान, उनका खुला मैत्री भाव, उनका जबरदस्त आत्मविश्वास और उनका ज्ञान भंडार उनसें मिलनेवाले व्यक्ति को बाँधकर रख लेता है।

उनके व्यक्तित्व में एक और गुण भी है कि वे किसी भी व्यक्ति के दिल में गहरे उतरकर उसकी छिपी बातें बाहर निकलवा लेते हैं। इसी वजह से तो शायर अबिद सुरती उन्हें एक `नाजुक दिल' कहते हैं। वे लिखते है - ``कमलेश्वर एक `नाजुक दिल' भी है यह शायद बहुत कम लोग जानते होंगे वे खुश होते हैं तो उनकी खुशी किसी से छिपी नहीं रहती। वे दु:खी होते है तो उनका चेहरा पोस्टर की तरह जाहिर कर देता है।``[5] कमलेश्वर का अंदाज ही निराला है क्योंकि कोई कहता है कि वे दु:ख में हँसते नजर आते हैं तो कोई कहता है कि उनके चेहरे से दु:ख प्रकट होता है। इसी वजह से तो उनका अंदाज दिलकश है।

यही नहीं कमलेश्वरजी को सीर्फ साहित्य से ही प्रेम अथवा लगाव नहीं है बल्कि राजनीति, संगीत आदि कई ऐसी परस्पर विरोधी चीजों से भी लगाव है। इसी वजह से अपने लेख `एक में अनेक' में शौरी राजन जी ने लिखा है - ``गोली मारिए साहित्य को, रसोई के बारे में बात छेड़िए, बस, खानसामा कमलेश्वर आप को तीन घण्टे तक लगातार पचासों तरह-तरह के खाने की चीजों की फेहरिस्त पकाने के तौर तरिके साथ ऐसे पेश करेंगे कि आप मुँह बाये ताकते रह जायेंगे।``[6] अर्थात सिर्फ एक ही विषय नहीं, किसी भी विषय पर लगातार दो-तीन घण्टे बोल सकने की अभुतपूर्व क्षमता उनमें दिखाई देती है।

कमलेश्वर के साहित्यिक व्यक्तित्व को अगर देखना हो तो उन्हें अधिकतर कहानीकार के नाते जाना जाता है। इसलिए उनके `कहानीकार' इस रूप से शुरूवात करनी होगी। उन्होंने वैसे तो अपनी कहानियाँ या लघू उपन्यासों में एक वर्ग को केन्द्र में रखा है। जीवन का अत्यंत यथार्थ चित्रण उन्होंने किया है। हिंदी साहित्य में वे एक `मसीहा' बनकर ही आ गये जो उन्हें कदापि पसन्द न था। उन्होंने कहानी की दृष्टि से महत्वपूर्ण माने-जाने वाले अचेतन कहानी, अकहानी जैसे आन्दोलनों को समाप्त किया और नयी कहानी में उसे

ढ़ाल दिया। उनकी कलम में एक प्रकार का जादू है। उनके साहित्य में युगबोध एवं युगचेतना को नया मोड़ दिया हुआ दिखाई देता है। इसी वजह से तो पूरे देश में उनका नाम मशहूर दिखाई देता है। उन्होंने हिंदी को जनता कि सतह पर लाया और ऐसे ढंग से अपनी बात कहीं की सामान्य आदमी उसे अपनी कहानी मानने लगा।

कमलेश्वर ने हिंदी कहानी को एक चौखट से बाहर निकालकर सामान्य लोगों तक पहुँचाया नवासन शर्माजी ने उनके बारे में लिखा है - ``कमलेश्वर की मानवतावादी दृष्टि उसे भारतीय भी बना देती है। कारयित्री प्रतिभा का वह खोजी रहा है। इसलिए हिंदी- अहिंदी भेदभाव के बगैर उसने प्रत्येक क्षेत्र के नवोदित लेखकों को उचित मर्यादा दी ही है, अपने सम्पादन काल में भारत की विभिन्न भाषाओं में हो रहे साहित्यिक आन्दोलनों, साहित्य कृतियों को हिंदी के माध्यम से जोड़ने का काम उसने किया है। जो हजार संगोष्ठियों या भाषणों से नहीं हो सकता था।``[7]

यह बात तो एकदम यथार्थ सिद्ध होती है।

कमलेश्वर के द्वारा हिंदी साहित्य को दी गयी देन अपूर्व है। उनके साहित्य को परिभाषित करते हुए विमल मित्र कहते है - ``मै कमलेश्वर को साहित्य का विद्रोही लेखक मानता हूँ। अंग्रेजी में जिसे VOICE OF DISSENT कहते हैं।``[8] विद्रोह के साथ-ही-साथ नव निर्माण की प्रेरणा भी उनके साहित्य में उतनी ही तीव्रता से पायी जाती है।

नवारूण शर्मा जैसा असमिया का लेखक जहॉ मानता है कि, उसकी सर्वोत्तम कृति अभी आने को है वहीं शांतनु आचार्य जैसा उड़िया लेखक कहता है - ``मै कमलेश्वर को एक समर्थ कवि मानता हुँ। जो शब्दों के द्वारा अपने अनुभवों को मुर्त रूप देता है। और पात्रों, स्थितियों तथा अर्थत्ता के द्वारा कहानियों में ढ़ालता है।``[9]

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि आदर्श व्यक्ति के सारे गुणों से युक्त कमलेश्वर में एक आदर्श साहित्यकार के भी गुण पाये जाते है। इसी वजह से मानवीय एवं साहित्यिक गुणों से युक्त ऐसा यह प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार है।

कमलेश्वर और उनकी फिल्में

पीछले दो-तीन दशकों से साहित्य के क्षेत्र में प्रसिद्ध कमलेश्वरजी का नाम फिल्मी परदे पर भी उभरने लगा। निरंतर संघर्ष करनेवाले इस व्यक्ति ने आकाशवाणी, दूरदर्शन पर कार्य किया निरंतर परिवर्तन चाहनेवाला यह जीव इस क्षेत्र से अछूता कैसे रह सकता था? अभिव्यक्ति को जहाँ मुर्त रूप मिलता हो, ऐसे क्षेत्र को उन्होनें चैलेंज के रूप में स्विकार किया।

एक श्रेष्ठ साहित्यकार जब फिल्म के क्षेत्र में चला जाता है तो उसपर जिस प्रकार की आलोचनाएँ की जाती है, उसी प्रकार की आलोचनाएँ कमलेश्वरजी पर भी हुई फिर भी वे डगमगाएँ नहीं है। उन्होंने अपना यह कार्य निरंतर जारी रखा है। अनामजी ने लिखा है - ``अगर ऐसा न होता तो आज कमलेश्वर के पास फिल्में लिखवानेवालों का सबसे लम्बा क्यु न होता। लोग जानते है कि, कमलेश्वर के हाथ में फिल्म सौंपकर हम बेफ़िक्र हो सकते हैं ------यह शख्श इत्मिनान का है। इधर-उधर से उठायेगा नहीं, इसलिए इसकी कहानी या स्क्रिप्ट लेकर हमें यह डर नहीं सताता कि पता नहीं कोई इसी थीम पर दूसरी फिल्म शुरू न कर दे।``[10]

कमलेश्वर की कोई कहानियों, उपन्यासों पर फिल्में बन चुकी हैं। फिल्मी दुनिया को उन्होंने एक नया मोड़ दिया है। वैचारिक फिल्मों का जो नया युग फिल्म के क्षेत्र में शुरू हो गया था, उसे निर्माण करने का श्रेय कमलेश्वर को ही जाता है।

कमलेश्वर सिर्फ फिल्मों की कहानियाँ लिखकर ही नहीं रूके हैं। उन्होंने पटकथा-तथा संवाद भी लिखे। ऐसी बात नहीं है कि हिंदी फिल्म के क्षेत्र में आये हुए कमलेश्वर पहले साहित्यकार रहे हो इससे पहले भी प्रेमचंद, भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर जैसे महनीय साहित्यकार इस क्षेत्र में असफल होकर लौट गये हैं। परंतु एक कमलेश्वर ही ऐसे साहित्यकार हैं जो लम्बे अर्से तक इस क्षेत्र में टिके रहें क्योंकि जब उन्होंने दूरदर्शन पर काम किया तो उन्होंने फिल्म निर्माण की समस्याओं को अच्छी तरह से पहचाना था। ऐसा भी नहीं की वे इस कार्य से संतुष्ठ है। फिल्म की मजबुरियों को समझते हुए भी वे निरंतर लिखते रहे। हमेशा ही वे सही फिल्म की तलाश में जुटे रहे।

आजकल उनके फिल्मों के चारों ओर चर्चे हैं। क्योकि संवाद लिखने की उनकी शैली, भाषा पर उनका जबरदस्त प्रभुत्व दिखाई देता है। सपनों की बोझील दूनिया की ओर जिनकी आँखे लगी हुई है, ऐसे लोग यथार्थ के धरातल पर आ जाते है, जब वे कमलेश्वर के स्क्रिप्ट पढ़ते है। लेकिन वे अपने स्क्रिप्टों की अपेक्षा दूसरे लेखकों की स्क्रिप्टों की सराहना करते है। चाहे स्वयं उनकी कहानियाँ कितनी ही मौलिक क्यों न रही हो, फिर भी दूसरों की स्तुती करने में माहिर है। इसी वजह से तो वे फिल्मों के क्षेत्र में इतने प्रसिद्ध हो चूके हैं।

कहानीकार कमलेश्वर

हिंदी साहित्य में कहानीकार के नाते जाने जानेवाले एक उँचे दर्जे के कहानीकार के रूप में कमलेश्वर को मान्यता मिल चुकी है। वे मुलभूत रूप से कहानीकार रहे हैं। `नयी कहानी' के दौर के पहले और उसके बाद कई साहित्यकार कहानी के क्षेत्र में आये, कई आन्दोलन हुए परंन्तु कमलेश्वर अपने स्थान पर डटे रहें। धनंजय वर्मा लिखते हैं - ``मैंने कमलेश्वर की कहानियों को बदली हुई और बदलती हुई मन:स्थिति की कहानियाँ कहा है।``[11]

कमलेश्वर की कथायात्रा सन् 1954 से लेकर सन् 1976 तक चलती रही हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में अपने समय का यथार्थ अंकन किया है। इसी बात का और ज्यादा विश्लेषण करते हुए शाम गोविंद लिखते है - ``किसी भी रचनाकार की सामर्थ्य और रचनात्मकता का आकलन उसकी श्रेष्ठ कृतियों को आधार मानकर ही किया जा सकता है। इसमें शक नहीं कि कमलेश्वर की कहानियों को समझना अपने समय, परिवेश और अनुभव एवं उसके अर्थ को पहचानना है। अनुभव विसंगतियों और मानवीय संवेदना की ऱ्हासमुलकता की पहचान।``[12]

कमलेश्वर ने अलग-अलग वैचारिक धरातल की जो कहानियाँ लिखी उन्हें एक विशेष कोटि में नहीं रखा जा सकता और न ही उनका वर्गीकरण किया जा सकता है। उनकी कहानियों की विशेषताएँ डा. रामदरश मिश्र ने इस प्रकार प्रस्तुत की है - ``परिवेश के बीच जीती हुई शक्ति और सीमाएँ झेलती हुई सहजता और कुछ असहजता के द्वन्द्व से गुजरती हुई, संवेदना की केन्द्रीयता में शिल्प की सहज और कभी-कभी बनावटी

नवीनता धारण करती हुई, मनुष्य के गहरे द्वन्द्व में धँसती और कभी-कभी सपाट प्रसंगों में पसर जाती हुई कमलेश्वर की कहानियाँ अधिक वैविध्यपूर्ण, पठनीय और विशिष्ठ है।''[13]

कमलेश्वर की कहानियों की विशेषताओं को जाँचने के लिए उपर्युक्त पंक्तियाँ काफी है। कमलेश्वर ने वैसे तो कई कहानियाँ लिखी है। उनमें से उनकी श्रेष्ठ कृतियाँ ढुँढ़ना काफी मुश्कील हो जाता है। फिर भी आलोचकों की निगाह में उनकी श्रेष्ठ कहानियाँ हैं-

राजा निरबंसिया , गर्मियों के दिन, नीली झील,जोखिम, रातें, दूसरें, खोई हुई दिशाएँ, बदनाम बस्ती, लाश, दिल्ली में एक और मौत, इतने अच्छे दिन आदि।

कमलेश्वर के कहानी संग्रह इस प्रकार है -

1) राजा निरबंसिया

2) कस्बे का आदमी

3) खोई हुई दिशाएँ

4) माँस की दरिया

5) जिंदा मुर्दे

6) बयान

7) मेरी प्रिय कहानियाँ

8) समांतर रचनाकार : कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ

कमलेश्वर की आरंभिक कहानियाँ

कमलेश्वर की पहली कहानी `कामरेड' सन 48 में (एटा) (उत्तर प्रदेश) से एक पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी है। उनकी कुछ आरभिक कहानियाँ कानपुर से प्रकाशित साप्ताहिक `जयभारत' में प्रकाशित हुई जो अब अप्राप्य है। उन्होंने आरंभ में कल्पना (हैद्राबाद), हंस (इलाहाबाद), संगम (इलाहाबाद),ज्ञानोदय (कलकत्ता), वसुधा (जबलपूर), सुप्रभात (कलकत्ता), समाज कल्याण (दिल्ली), आजकल (दिल्ली), लहर

(अजमेर) नई कहानियाँ (इलाहाबाद-दिल्ली) आदि पत्रकाओं में आरंभिक लेखन कार्य किया। कहानी के बारे में स्वयं कमलेश्वर ने लिखा है - ``कहानी लिखना मेरा व्यवसाय नहीं विश्वास है ! -----कहानी लिखना मेरे लिए यातनापूर्ण नहीं, यातनापूर्ण वे कारण है जो मुझे कहानी लिखने के लिए मजबुर करते हैं। और यह मजबुरी तभी होती है जब मेरा अपना संकट दूसरों के संकट के सम्बद्ध होकर असह्य हो जाता है या मेरी अपनी करूणा दूसरों की संवेदना से मिलकर अनात्म हो जाती है। कहानी मुझे औरों से जोडती है या यह कहुँ कि बहुत से सम्पृक्त होने की संस्कारिक स्थिति ही कहानी की शुरूवात है।``

यह बात तो सभी जानते है कि, कमलेश्वरजी ने `नयी कहानी को एक अलग मोड़ दे दिया है। वे स्वयं `नयी कहानी` के सन्दर्भ में लिखते हैं - ``नयी कहानी मेरे लिए आन्दोलन नहीं, नये के लिए निरंतर प्रयत्नशील और प्रयोगशील रहने की प्रक्रिया है। `प्रयोगशील` शब्द काफी भ्रामक हो गया है। इस शब्द ने लेखक की जबाबदे ही समाप्त करने की कोशिश की है। मेरे लिए प्रयोगशीलता जबाबदेही से निरपेक्ष नहीं हैं। जो कुछ मैं लिखता हूँ, उसके लिए अपने को जबाबदेही भी पाता हूँ।``[14] इस प्रकार अपने साहित्य के प्रति अपने आप को उत्तरदायी माननेवाले कहानीकार कमलेश्वर है।

कहानी संपादक कमलेश्वर

कमलेश्वरजी ने कहानी का सिर्फ सृजन ही नहीं किया है तो अन्य साहित्यकारों की कृतियों का पत्रिकाओं के माध्यम से संपादन तथा अनुवाद भी किया है। उनके संपादक रूप को देखना हो तो `कहानी` मासिक पत्रिका से लेकर `सारिका` तक अनेक पत्रिकाओं की लम्बी यात्रा को देखना होगा। उन्होंने कई पत्रिकाओं के संपादक, सहयोगी आदि के रूप में कार्य किया जैसे `संकेत`, `इंगित`, आदि। परंतु प्रमुखतम रूप में 1963 से 1965 तक `नई कहानियाँ` और 1967 से `सारिका` पत्रिका का संपादन उन्होंने किया। उन्होंने 1977 में `सारिका` पत्रिका को समयगत सच्चाईयों और जनसाहित्य की समांतर पक्षिकी बना दिया। जिस प्रकार अन्य कई बाते जैसे रनिंग कमेन्ट्री आदि के वे प्रवर्तक माने जाते हैं। उसी प्रकार `समांतर कहानी` के भी वे प्रवर्तक माने जाते हैं। सिर्फ यहीं नहीं उन्होंने अपनी पत्रिकाओं में अन्यान्य भाषाओं की कहानियों का अनुवाद करके छापा। इसी वजह

से अन्य भाषाओं के साथ उनका सम्बन्ध प्रस्थापित हो गया। उनकी `सारिका` ने भारतीय कहानिकारों को विश्व की कहानियों से परिचित कराया।

कमलेश्वर ने `सारिका` के जो विशेषांक निकाले उनमें कुछ नये स्तंभों को भी प्रकाशित किया जैसे गर्दिश के दिन आदि। उन्होंने मोहन, राकेश, दुष्यंत कुमार जैसे लेखकोंपर विशेषांक निकालें। समांतर कहानी के आंदोलन में उन्होंने दस विशेषांक निकालें।

आलोचक कमलेश्वर

कमलेश्वर कहानियों के आलोचक के रूप में भी महत्त्वपूर्ण कार्य करते रहे। उनकी `नयी कहानी की भुमिका` इस आलोचनात्मक किताब में उन्होंने नई कहानी का अस्तित्व नई कहानी और आधुनिकता नई कहानी का रूपबंध आदि महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा करते हुए नई कहानी के अलग-अलग रूपों को प्रस्तुत किया। कमलेश्वर ने अन्य भी कई आलोचनात्मक लेख लिखे है जो `नई कहानी के बाद` या `मेरा पन्ना` में प्रकाशित हुए जैसे- अकहानी आन्दोलन, जॉघों के जंगल, कामकली के बचकाने खेल, प्रेतों का विद्रोह, वैचारिक कफ्न और ये आज्ञाकारी विद्रोह आदि।

इस प्रकार हिंदी साहित्य के क्षेत्र में एक चर्चित साहित्यकार के रूप में उभरे कहानीकार, उपन्यासकार, संपादक कमलेश्वर आलोचक के रूपमें भी सफलता से कार्य करते रहें।

कमलेश्वर का अन्य साहित्य

कमलेश्वर चाहे कहानीकार के रूप में जाने जाते हो फिर भी उन्होंने निम्नलिखित उपन्यास लिखे हैं -

1. एक सड़क सत्तावन गलियॉं। (सन् 1961 ई.)
2. डाक बंगला ।(सन् 1962 ई.)
3. तीसरा आदमी। (सन् 1964 ई.)
4. लौटे हुए मुसाफिर। (सन् 1963 ई.)

5. समुद्र में खोया हुआ आदमी। (सन् 1992 ई.)

6. काली आँधी। (सन् 1974 ई.)

7. अगामी अतीत। (सन् 1976 ई.)

8. वही बात। (सन् 1980 ई.)

9. सुबह-दोपहर-शाम। (सन् 1982 ई.)

10. रेगिस्तान। (सन् 1988 ई.)

कमलेश्वर के द्वारा की गयी आलोचना निम्नलिखित रूप से पायी जाती हैं -

1. नयी कहानी की भूमिका।

2. नयी कहानी के बाद।

3. मेरा पन्ना : समांतर सोच।

कमलेश्वर ने एक यात्राा वितरण भी लिखा है - 1) खण्डित यात्राएँ।

कमलेश्वर के द्‌वारा लिखे नाटक एवं नाट्य रूपांतर निम्नलिखित रूप से पाये जाते है -

1) अधूरी आवाज।

2) रेगिस्तान।

3) चारूलता।

4) खड़िया का घेरा।

5) गोदान-गबन, निर्मला के नाट्य रूपांतर।

6) बाल- नाटक : चार संग्रह।

कमलेश्वर के द्‌वारा संपादित साहित्य निन्मलिखित हैं -

1) नई धारा : समकलीन कहानी विशेषांक।

2) संकेत : बृद्ध साहित्यिक संकलन।

3) समांतर - 1 प्राप्तिस्थान।

4) मेरा हमदम मेरा दोस्त।

5) गर्दिश के दिन।

6) आध्य कथाकार।

7) प्रगतिशील कहानियाँ : तीन खण्डों में।

कमलेश्वर ने जिन फिल्मों का निर्माण किया, कथाएँ लिखी, संवाद लिखे वे फिल्में हैं -

1) बदमान बस्ती (एक सड़क सत्तावन गलियाँ)

2) फिरभी (तलाश - कहानी)

3) अमानुष (संवाद लेखन)

4) आँधी (काली आँधी)

5) मौसम (अगामी अतीत)

6) घड़ी के दो हाथ (पटकथा और संवाद)

7) पति-पत्नी और वो (पटकथा और संवाद)

8) आनंद आश्रम (संवाद लेखन)

9) तुम्हारी कसम (पटकथा और संवाद)

10) वही बात (कहानी,पटकथा,संवाद)

11) मृगतृष्णा (संवाद लेखन)

12) राम-बलराम (पटकथा और संवाद)

इसी प्रकार हम पाते है कि कमलेश्वर का साहित्य बहुमुखी रहा है।

निष्कर्ष

आधुनिक काल के साहित्यकारों में कहानीकार के नाते अपना एवं अलग ही स्थान बनानेवाले कमलेश्वर के जीवन परिचय में हमें इस बात का पता चलता है कि उनका अधिकांश जीवन अंधेरे में ही है। उनकी पारिवारिक स्थिति, विवाह बच्चे आदि के बारें में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं हो सकी है। यह बात उनके द्वारा की गयी अधिकांश नौकरियों से ही साफ जाहिर हो जाती है कि उन्हें काफी संघर्ष अपने जीवन में करना पड़ा। इन कठोर संघर्षो से जुझकर तटस्थ रहना शायद उन्हें अपनी माँ ने सीखाया है। इन संघर्षो ने भी उन्हें ऐसा अनुभवी व्यक्ति बना दिया जिन्होंने अपने साहित्य में सामान्य आदमी के यथार्थ को पहचाना। उनके साहित्य में मैनेपुरी का चित्रण अधिक होना अत्यंत स्वाभाविक है क्योंकि यह उनका जन्मस्थान ही रहा है। कहानीकार, उपन्यासकार, आलोचक, संपादक के नाते जाने जानने के बावजूद भी उन्हें फिल्म के क्षेत्र में आना पड़ा शायद इसके पिछे आर्थिक कारण रहा हो परंतु आज वे एक अच्छे फिल्म कहानीकार के रूप में भी जाने जाते हैं। उन्होंने कई चिजों का नवनिर्माण किया है। जैसे- दूरदर्शन, आकाशवाणी पर रनिंग कामेन्ट्री और समांतर कहानी आदि। वे एक सृजनशील व्यक्ति रहे है। उन्होंने अपने साहित्य सृजन के लिए अपने परिवेश से ही सामग्री को जुटाया है। उनके प्रागतिशिल विचारों का प्रभाव उनके साहित्यपर देखने को मिलता है। उन्होंने अपने जीवन के संघर्ष को अपने साहित्य के पात्रों पर चित्रित किया है। उनके गुणों के बारे में जो अन्यान्य आलोचकों ने कहा है इससे हमें इस बात का पता चलता है कि वे कुछ श्रेष्ठ गुणों से युक्त व्यक्ति है। इस प्रकार कमलेश्वर यह हिंदी साहित्य के लिए एक वरदान के रूप में सिद्ध हुए हैं।

संदर्भ [redacted] सूची

1. संपादक मधुकर सिंह - `कमलेश्वर` - पृष्ठ 87
2. संपादक मधुकर सिंह - `कमलेश्वर` - पृष्ठ 97
3. वही वही - `वही` - पृष्ठ 91
4. संपादक मधुकर सिंह - `कमलेश्वर` - पृष्ठ 357
5. वही वही - `वही` - पृष्ठ 362
6. संपादक मधुकर सिंह - `कमलेश्वर` - पृष्ठ 369
7. संपादक मधुकर सिंह - `कमलेश्वर` - पृष्ठ 356
8. वही वही - `वही` - पृष्ठ 366
9. वही वही - `वही` - पृष्ठ 375
10. संपादक मधुकर सिंह - `कमलेश्वर` - पृष्ठ 352
11. संपादक मधुकर सिंह - `कमलेश्वर` - पृष्ठ 106-107
12. संपादक मधुकर सिंह - `कमलेश्वर` - पृष्ठ 117
13. वही वही - `वही` - पृष्ठ 131
14. संपादक मधुकर सिंह - `कमलेश्वर` - पृष्ठ 103